ISSN: 2395-7852

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

Volume 11, Issue 3, May-June 2024

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

IMPACT FACTOR: 7.583

| www.ijarasem.com | ijarasem@gmail.com | +91-9940572462 |

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 7.583 | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 11, Issue 3, May-June 2024 |

21 वीं शताब्दी में भारत रूस सम्बन्ध

SHRAVAN KUMAR

B.Sc., M.A., POLITICAL SCIENCE, B.Ed., NET, PALI, RAJASTHAN, INDIA

सार

भारत और रूस ने पिछले 71 वर्षों में अपने संबंधों को एक "विशेष और विशेषाधिकार प्राप्त" रणनीतिक साझेदारी के स्तर पर ले जाने की दिशा में काम किया है। 2000 के बाद से होने वाले वार्षिक शिखर सम्मेलन ने राजनीतिक तथा सामरिक सहयोग, सैन्य एवं सुरक्षा सहयोग, अर्थव्यवस्था, ऊर्जा, उद्योग, विज्ञान और प्रौद्योगिकी, आदि क्षेत्रों में सहयोग के व्यापक पहलुओं पर समग्र मूल्यांकन करने में मदद की है।[1] 19वां शिखर बैठक नई दिल्ली में अक्टूबर 2018 को आयोजित किया गया था जहां दोनों नेताओं, भारतीय प्रधानमंत्री (पीएम) नरेंद्र मोदी और रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने द्विपक्षीय संबंधों का जायजा लिया और साझेदारी को मजबूत करने के लिए भविष्य के अवसरों पर भी चर्चा की।

इस लेख का उद्देश्य दो विशिष्ट क्षेत्रों में की गई प्रगति की समीक्षा करना है, यानि 19वें वार्षिक शिखर सम्मेलन के संयुक्त वक्तव्य "भारत-रूस: बदलती दुनिया में एक स्थायी भागीदारी" पर आधारित द्विपक्षीय सहयोग के आर्थिक एवं ऊर्जा क्षेत्र।

परिचय

प्राचीन तथा स्थापित रणनीतिक भागीदारों के बीच आर्थिक सहयोग का वर्तमान स्तर पूर्व के इष्टतम सहयोग से कही अधिक है

आर्थिक क्षेत्र में, जो द्विपक्षीय संबंधों के महत्वपूर्ण स्तंभों में से एक है, भारत तथा रूस सहयोग में अपनी मौजूद क्षमता का उपयोग करने से अभी काफी दूर हैं। दोनों देश इन खामियों को दूर करने तथा इस क्षेत्र का विस्तार करने की कोशिश कर रहे हैं। हालांकि, अब तक के घटनाक्रम असमान रहे हैं।[1,2,3]

हम, भारत और रूस के नेता, हमारे देशों के बीच राजनयिक संबंधों की स्थापना की 70वीं वर्षगांठ पर यह मानते हैं कि भारत-रूस विशेष एवं विशेषाधिकार प्राप्त सामरिक भागीदारी दो महान शक्तियों के बीच आपसी विश्वास का एक अनूठा संबंध है। हमारे संबंधों के दायरे में राजनैतिक संबंध से लेकर सुरक्षा, व्यापार एवं अर्थव्यवस्था, सैन्य एवं तकनीकी क्षेत्र, ऊर्जा, वैज्ञानिक, सांस्कृतिक एवं मानवतावादी आदान-प्रदान और विदेशी नीति तक सहयोग के सभी क्षेत्र शामिल हैं। यह दोनों देशों के राष्ट्रीय हितों को बढ़ावा देने में मदद करता है और कहीं अधिक शांतिपूर्ण एवं न्यायसंगत विश्व व्यवस्था की स्थापना में योगदान करता है।

हमारे द्विपक्षीय संबंध गहरी पारस्परिक समझ एवं सम्मान, आर्थिक एवं सामाजिक विकास के साथ-साथ विदेश नीति में भी समान प्राथमिकताओं पर आधारित हैं। हम शांति एवं सुरक्षा सुनिश्चित करने और विश्व व्यवस्था को आकार देने के लिए समान दृष्टिकोण का समर्थन करते हैं जो सांस्कृतिक एवं सभ्यतागत विविधता को दर्शाता है और साथ ही मानव जाति की एकता को मजबूत करता है। भारत-रूस संबंध समय की कसौटी पर खरा है और बाहरी प्रभावों से प्रतिरक्षित है।

रूस ने भारत को आजादी के लिए उसके संघर्ष में अविश्वसनीय रूप से समर्थन किया और उसे आत्मनिर्भरता प्राप्त करने में मदद की। अगस्त 1971 में हमारे देशों ने शांति, मैत्री एवं सहयोग के लिए एक संधि पर हस्ताक्षर किए जो एक-दूसरे की संप्रभुता एवं हितों का सम्मान, अच्छे पड़ोसी धर्म और शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व जैसे पारस्परिक संबंधों के मूल सिद्धांतों की रूपरेखा तैयार करती है। दो दशक बाद जनवरी 1993 में भारत और रूस ने मैत्री एवं सहयोग की एक नई संधि के तहत उन प्रावधानों की अनिवार्यता की पुष्टि की।

भारत गणराज्य और रशियन फेडरेशन के बीच 3 अक्टूबर 2000 को सामरिक साझेदारी पर की गई घोषणा ने अंतरराष्ट्रीय शांति एवं सुरक्षा सुनिश्चित करने, प्रमुख वैश्विक एवं क्षेत्रीय समस्याओं को निपटाने के साथ-साथ आर्थिक, सांस्कृतिक, शैक्षणिक एवं अन्य क्षेत्रों में करीबी सहयोग सुनिश्चित करने की दिशा में समन्वित दृष्टिकोण के साथ द्विपक्षीय संबंधों को एक नई ऊंचाई दी है। इस साझेदारी को 21 दिसंबर 2010 को विशेष एवं विशेषाधिकार प्राप्त सामरिक भागीदारी के स्तर तक बढ़ाया गया था।

भारत-रूस संबंधों के व्यापक विकास को बेहतर करना दोनों देशों की विदेश नीति की पहली प्राथमिकता है। हम विभिन्न क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर पहल शुरू करते हुए हमारे सहयोग की संभावनाओं को विस्तृत करना और हमारे द्विपक्षीय[4,5,6] एजेंडे को आगे बढ़ाना एवं समृद्ध करना जारी रखेंगे ताकि इसे कहीं अधिक परिणाम-उन्मुख बनाया जा सके।

भारत और रूस की अर्थव्यवस्था ऊर्जा क्षेत्र में एक-दूसरे की पूरक हैं। हम अपने राज्यों के बीच एक 'एनर्जी ब्रिज' बनाने और परमाणु, हाइड्रोकार्बन, पनबिजली एवं अक्षय ऊर्जा सहित ऊर्जा के सभी क्षेत्रों में द्विपक्षीय संबंधों के विस्तार का प्रयास करेंगे और ऊर्जा दक्षता में सुधार की कोशिश करेंगे।

भारत और रूस का मानना है कि प्राकृतिक गैस का व्यापक उपयोग, आर्थिक रूप से कुशल एवं पर्यावरण के अनुकूल ईंधन, जो वैश्विक ऊर्जा बाजार का एक अभिन्न हिस्सा बन चुका है, ग्रीनहाउस गैस का उत्सर्जन घटाने के लिए काफी महत्वपूर्ण है और उससे जलवायु परिवर्तन पर पेरिस समझौते के प्रावधानों को पूरा करने एवं टिकाऊ आर्थिक विकास हासिल करने में मदद मिलेगी। परमाणु ऊर्जा के शांतिपूर्ण उपयोग में सहयोग दोनों देशों के बीच सामरिक साझेदारी के एक प्रमुख पहचान के तौर पर उभरा है जो भारत की ऊर्जा सुरक्षा में योगदान करता है और व्यापक वैज्ञानिक एवं तकनीकी सहयोग को स्फूर्ति प्रदान करता है। दोनों पक्षों के सम्मिलित प्रसायों से हमारी असैन्य परमाणु साझेदारी में उल्लेखनीय उपलब्धियों की एक स्थिर एवं स्पष्ट श्रृंखला रही है जिसमें कुडनकुलम परमाणु ऊर्जा परियोजनाओं को आगे बढ़ाना और इसे भारत के सबसे बड़े ऊर्जा केंद्रों में तब्दील करना शामिल है। हम कुडनकुलम परमाणु बिजली संयंत्र की इकाई 5 और 6 के लिए जनरल फ्रेमवर्क एग्रीमेंट एंड क्रेडिट प्रोटोकॉल के समापन का स्वागत करते हैं। हम 11 दिसंबर, 2014 को दोनों देशों के बीच हस्ताक्षरित परमाणु ऊर्जा के शांतिपूर्ण उपयोग [7,8,9]में सहयोग को मजबूती देने के लिए स्ट्रैटेजिक विजन के कार्यान्वयन की दिशा में काम करेंगे। भारत-रूस सहयोग का भविष्य परमाणु ऊर्जा, परमाणु ईंधन चक्र और परमाणु विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के व्यापक दायरे में सहयोग के जबरदस्त वादे पर टिका है।

भारत और रूस के बीच परमाणु ऊर्जा के क्षेत्र में बढ़ती साझेदारी ने भारत सरकार की 'मेक इन इंडिया' पहल के तहत भारत में उन्नत परमाणु विनिर्माण क्षमताओं के विकास के अवसर खोले हैं। भारत और रूस ने 24 दिसंबर 2015 को हस्ताक्षरित 'प्रोग्राम ऑफ एक्शन फॉर लोकेलाइजेशन ऑफ इंडिया' को जल्द से जल्द लागू करने और अपने परमाणु उद्योगों को ठोस एवं करीबी साझेदारी के लिए प्रोत्साहित करने के लिए खुद को प्रतिबद्ध किया है।

हम रशियन फेडरेशन के आर्कटिक शेल्फ में हाइड्रोकार्बन की खोज एवं उत्खनन के लिए संयुक्त परियोजनाएं शुरू करने में दिलचस्पी रखते हैं।

हम पारस्परिक रूप से लाभप्रद सहयोग को बढ़ावा देने के लिए समुद्री अनुसंधान एवं प्रशिक्षण के क्षेत्र में अपनी ताकत के इस्तेमाल से गहरे समुद्र में हाइड्रोकार्बन संसाधनों, पॉलिमर नोड्यूल्स एवं अन्य समुद्री संसाधनों की खोज एवं विकास के क्षेत्र में पारस्परिक रूप से लाभप्रद सहयोग संभावनाओं के दोहन के लिए संयुक्त रणनीति तैयार करेंगे।[10,11,12]

हम भारतीय क्षेत्र में मौजूदा बिजली संयंत्रों के आधुनिकीकरण एवं नए संयंत्रों की स्थापना के लिए दोनों राज्यों की ऊर्जा कंपनियों के बीच सहयोग का स्वागत करते हैं। हम प्रौद्योगिकी की साझेदारी, विभिन्न क्षेत्रों एवं जलवायु परिस्थितियों में काम करने के अनुभव और ऊर्जा कुशल प्रौद्योगिकी के इस्तेमाल के जरिये एक-दूसरे के देश में संयुक्त परियोजनाएं विकसित करने का प्रयास करेंगे ताकि स्वच्छ, पर्यावरण के अनुकूल एवं सस्ते ऊर्जा संसाधनों का विकास एवं विस्तार हो सके।

हमारे प्रमुख आर्थिक उद्देश्यों में व्यापार एवं निवेश का विस्तार करना और वस्तुओं एवं सेवाओं के व्यापार में विविधीकरण खासकर द्विपक्षीय व्यापार में उच्च-प्रौद्योगिकी उत्पादों की हिस्सेदारी बढ़ाना, औद्योगिक सहयोग को बढ़ावा देना, उद्यमशीलता एवं निवेश के लिए माहौल में सुधार लाना और दोनों देशों के बीच बैंकिंग एवं वित्तीय मामलो में सहयोग बढ़ाना शामिल हैं। हमारी रणनीतिक साझेदारी के अगले चरण के तहत हम आपसी सहमति वाले क्षेत्रों में संयुक्त विकास परियोजनाओं के जरिये तीसरे देशों के लिए हमारे द्विपक्षीय तकनीकी, आर्थिक एवं वैज्ञानिक सहयोग का विस्तार करेंगे।

हम अन्य देशें की मुद्राओं पर अपने द्विपक्षीय व्यापार की निर्भरता घटाने के लिए अपने राष्ट्रीय मुद्राओं में भारत-रूस व्यापार को बढ़ावा देने के लिए किए जाने वाले प्रयासों में समन्वय स्थापित करेंगे। हम संयुक्त रूप से हमारे व्यापारिक समुदायों को मौजूदा व्यावहारिक योजनाओं एवं तंत्रों को निपटाने में भारतीय रिजर्व बैंक और बैंक ऑफ रशिया द्वारा अनुमोदित मुद्राओं का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित करेंगे।

हम एक ऐसे क्रेडिट रेटिंग उद्योग के विकास के लिए अपनी स्थितियों का समन्वय करेंगे जो बाजार प्रतिभागियों के लिए पारदर्शी और राजनीतिक परिस्थितियों से स्वतंत्र होगा। इस लिहाज से हम क्रेडिट रेटिंग के क्षेत्र में हमारे कानूनों को सुसंगत बनाने के उद्देश्य से किए जाने वाले कार्यों का समर्थन करेंगे और हमारी स्थानीय क्रेडिट रेटिंग एजेंसियों को मान्यता प्रदान करेंगे।

हम क्षेत्रीय स्तर पर आर्थिक सहयोग विकसित करने के महत्व को स्वीकार करते हैं। हम यूरेशियन इकनॉमिक यूनियन और भारत गणराज्य के बीच मुक्त व्यापार समझौते पर वार्ता जल्द शुरू करने के लिए सुविधा प्रदान करेंगे।

हम शांति, प्रगति एवं समृद्धि के लिए क्षेत्रीय संपर्क के दमदार तर्क की सराहना करते हैं। हमारा मानना है कि कनेक्टिविटी को निश्चित तौर पर मजबूत किया जाना चाहिए। यह सभी संबंधित पक्षों की संप्रभुता का सम्मान करते हुए उनसे बातचीत और सहमति पर आधारित होना चाहिए। पारदर्शिता, स्थिरता एवं दायित्व के सिद्धांतों द्वारा निर्देशित रूसी एवं भारतीय पक्ष इंटरनैशनल नॉर्थ साउथ ट्रांसपोर्ट कॉरिडोर और ग्रीन कॉरिडोर के कार्यान्वयन के लिए प्रभावी बुनियादी ढांचे के निर्माण के लिए अपनी प्रतिबद्धता दोहराते हैं।[13,14,15]

हम इस तथ्य को ध्यान में रखते हैं कि दोनों देश नवीनतम वैज्ञानिक प्रगति एवं नवाचार के आधार पर ज्ञान पर आधारित अर्थव्यवस्थाओं के निर्माण के लिए प्रतिबद्ध हैं। हम अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी, विमानन, नए पदार्थ, कृषि, सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी, दवा, फार्मास्युटिकल्स, रोबोटिक्स, नैनोटेक्नोलॉजी, सुपरकम्प्यूटिंग तकनीकी, कृत्रिम बौद्धिकता एवं भौतिक विज्ञान जैसे क्षेत्रों में वैज्ञानिक सहयोग को मजबूती देने और विदेशी बाजारों में उच्च प्रौद्योगिकी वाले उत्पादों को उतारने के लिए डिजाइन, विकास एवं विनिर्माण में सहयोग का दायरा बढ़ाएंगे। हम दोनों देशों के बीच उच्च प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में सहयोग के लिए एक उच्चस्तरीय समिति के गठन का स्वागत करते हैं।

हम बुनियादी ढांचे के आधुनिकीकरण के उद्देश्य से संयुक्त प्रयासों को आगे बढ़ाने के लिए मिलकर काम करेंगे, शहरीकरण की चुनौतियों से निपटने के लिए साथ मिलकर राह तलाशेंगे, खाद्य सुरक्षा, जल एवं वन संपदा के संरक्षण से संबंधित मुद्दों को निपटाएंगे और लघु एवं मझोले उद्यमों के विकास एवं कौशल विकास के लिए राष्ट्रीय कार्यक्रमों को लागू करने एवं आर्थिक सुधारों को बढ़ावा देने के लिए अपने अनुभवों को साझा करेंगे।

हम हीरा उद्योग में सहयोग की संभावनाएं विकसित करने के लिए इस उद्देश्य से साथ मिलकर काम करेंगे ताकि इस क्षेत्र में हमारे दोनों देशों के मौजूदा संसाधनों और ताकतों का पूरा फायदा उठाया जा सके। हम हीरा बाजार में अज्ञात कृत्रिम पत्थरों के प्रवेश को रोकने और हीरे के जेनेरिक विपणन कार्यक्रमों के विकास का समर्थन करने के लिए भी अपने संयुक्त प्रयासों में तेजी लाएंगे।

जहाज निर्माण, नदी नेविगेशन एवं विलवणीकरण प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में रूस की ताकत को स्वीकार करते हुए हम भारत में व्यापक नदी प्रणालियों के प्रभावी उपयोग के लिए अंतर्देशीय जलमार्गों, नदी तटबंधों, बंदरगाहों एवं कार्गो कंटेनरों के विकास के लिए प्रौद्योगिकी हस्तांतरण एवं अनुभव साझेदारी के जरिये संयुक्त परियोजनाओं के विकास के लिए साथ मिलकर काम करेंगे।

हम हाईस्पीड रेलवे, डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर के विकास में साथ मिलकर काम करेंगे। साथ ही संयुक्त विकास, प्रौद्योगिकी साझेदारी एवं कर्मियों के प्रशिक्षण के जरिये नई प्रौद्योगिकी के इस्तेमाल से कुशल रेल परिवहन सुनिश्चित करने के लिए साथ मिलकर काम करेंगे ताकि रेलरोड क्षेत्र में एक-दूसरे की क्षमता का लाभ उठाया जा सके।

हम एक-दूसरे के देश में कृषि एवं खाद्य वस्तुओं के लिए बाजार पहुंच बढ़ाने और कृषि एवं खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्र में खेती से लेकर कटाई, उत्पादन, प्रसंस्करण एवं विपणन रणनीति तैयार करने तक तमाम गतिविधियों के व्यापक दायरे में मौजूद संभावनाओं के दोहन के लिए अनुसंधान एवं विकास के जरिये संयुक्त रणनीति तैयार करने के लिए साथ मिलकर काम करेंगे। हम प्राकृतिक संसाधनों के किफायती एवं पर्यावरण के अनुकूल उपयोगिता सुनिश्चित करने के लिए खनन एवं धातु विज्ञान के क्षेत्र में खोज के लिए मौजूदा प्रौद्योगिकी के इस्तेमाल, विकास एवं नई प्रौद्योगिकी की साझेदारी के जरिये एक-दूसरे के देश में प्राकृतिक संसाधनों के प्रभावी उपयोग के लिए संयुक्त परियोजनाओं का पता लगाने के लिए साथ मिलकर काम करेंगे।[16,17,18]

हम मानते हैं कि भारत 2020 तक तीसरा सबसे बड़ा विमानन बाजार बन जाएगा और इस संबंध में हमारा मानना है कि भारत सरकार की रीजनल कनेक्टिविटी स्कीम संयुक्त उत्पादन में सहयोग को मजबूती देने और सृजित मांग को पूरा करने एवं तीसरे देशों को निर्यात के लिए विमानन विनिर्माण के क्षेत्र में संयुक्त उद्यम स्थापित करने के लिए एक अवसर प्रदान करती है।

विचार-विमर्श

हमारा द्विपक्षीय रक्षा सहयोग मजबूत आपसी विश्वास पर आधारित है। भारत को रूस अपनी आधुनिक सैन्य प्रौद्योगिकी का निर्यात करता है। हम सैन्य-तकनीकी सहयोग पर मौजूदा समझौतों के तहत अपने पक्ष के दायित्वों का अनुपालन करते हुए भविष्य की प्रौद्योगिकी की साझेदारी एवं उसे लागू करने में निर्भरता बढ़ाने के साथ ही संयुक्त उद्यम के जरिये सैन्य हार्डवेयर एवं कलपुर्जों के सह-विकास एवं सह-उत्पादन में सहयोग को बढ़ाएंगें और उसमें तेजी लाएंगे।

हम सैन्य-से-सैन्य सहयोग के एक गुणात्मक उच्च स्तर की ओर काम करेंगे। हम नियमित तौर पर संयुक्त स्थल एवं समुद्री सैन्य अभ्यास एवं एक-दूसरे के सैन्य संस्थानों में प्रशिक्षण को जारी रखेंगे। इस साल पहली बार हम तीनों सेनाओं के अभ्यास आईएनडीआरए-2017 को देखेंगे।

समाज की भलाई के लिए उपयुक्त प्रौद्योगिकी के इस्तेमाल के मद्देनजर अंतरिक्ष अनुसंधान में द्विपक्षीय सहयोग के लिए हमें पर्याप्त अवसर दिख रहा है।

हम प्राकृतिक आपदाओं की रोकथाम एवं उनसे निपटने के लिए संयुक्त कार्य को जारी रखेंगे।

रूस के सुदूर पूर्व क्षेत्र पर विशेष जोर देते हुए हम अपने प्रांतों एवं राज्यों के बीच बेहतर सहयोग को सक्रियतापूर्वक बढ़ावा देना और उसे सुधारना चाहते हैं।

भारत और रूस 21वीं सदी में अंतरराज्यीय संबंधों के विकास की स्वाभाविक एवं अपरिहार्य प्रक्रिया के तहत अंतरराष्ट्रीय संबंधों में बहु-ध्रुवीय विश्व व्यवस्था की स्थापना का सम्मान करते हैं। इस संदर्भ में हम कानून के शासन के सिद्धांत के आधार पर अंतरराष्ट्रीय संबंधों की प्रणाली को जनतांत्रित बनाने और विश्व राजनीति के समन्वय में संयुक्त राष्ट्र की केंद्रीय भूमिका के लिए सहयोग बढ़ाएंगे। हमारा मानना है कि संयुक्त राष्ट्र में सुधार की आवश्यकता है और खासकर संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद को समकालीन वास्तविकताओं का अधिक प्रतिनिधित्व देने और उभरती चुनौतियों एवं खतरों से कहीं अधिक प्रभावी तरीके से निपटने

के लिए। [19,20]रूस ने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में सुधार के तहत भारत की स्थायी सदस्यता की दावेदारी का पुरजोर समर्थन किया है। हम सकारात्मक रूप से एकजुट वैश्विक एजेंडे की प्रगति का समर्थन करेंगे, वैश्विक एवं क्षेत्रीय स्थिरता एवं सुरक्षा सुनिश्चित करने, चुनौतियों एवं खतरों से निपटने और संकट के समाधान के लिए न्यायसंगत एवं समन्वित दृष्टिकोण को सक्रियता से बढ़ावा देने के लिए अंतरराष्ट्रीय प्रयासों के साथ सक्रियता से जुड़ेंगे।

हम वैश्विक राजनीतिक, आर्थिक, वित्तीय एवं सामाजिक संस्थानों में सुधार और लोकतांत्रिक मूल्यों को बढ़ावा देने के लिए काम करेंगे ताकि वे अंतरराष्ट्रीय समुदाय के सभी सदस्यों के हितों को बेहतर तरीके से समायोजित कर सकें। हम देशों के वैध हितों एवं प्रमुख चिंताओं को नजरअंदाज करते हुए एकतरफा अथवा संप्रभुता के सम्मान को ठेस पहुंचाने वाले किसी भी वर्ताव का विरोध करते हैं। विशेष रूप से हम दबाव बनाने के लिए राजनीतिक एवं आर्थिक प्रतिबंधों के एकतरफा इस्तेमाल को स्वीकार नहीं करते हैं।

हम ब्रिक्स के भीतर सौहार्दपूर्ण सहयोग को बढ़ावा देना चाहते हैं जो हमारे संयुक्त प्रयासों के परिणामस्वरूप वैश्विक मामलों में लगातार आधिकारिक एवं प्रभावशाली भूमिका बढ़ा रहा है।

हम डब्ल्यूटीओ, जी20 एवं संघाई सहयोग संगठन के साथ-साथ रूस-भारत-चीन सहयोग सहित अन्य बहुपक्षीय मंचों एवं संगठनों में सहयोग को बढ़ावा देना जारी रखेंगे।

शंघाई सहयोग संगठन में भारत की पूर्ण सदस्यता से यूरोशिया एवं एशिया-प्रशांत क्षेत्र में शांति एवं स्थिरता सुनिश्चित करने और आर्थिक विकास एवं समृद्धि हासिल करने के साथ-साथ अंतरराष्ट्रीय स्तर पर संगठन को बेहतर बनाने के लिए संगठन की क्षमता में उल्लेखनीय सुधार होगा।

हम साझा सिद्धांतों के आधार पर एशिया-प्रशांत क्षेत्र में खुली, संतुलित एवं समावेशी सुरक्षा व्यवस्था स्थापित करने के प्रयासों को जारी रखेंगे और पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलन के दायरे में उचित बातचीत के जरिये इस क्षेत्र के सभी राज्यों के वैध हितों का ध्यान रखेंगे।

हम पश्चिम एशिया और उत्तरी अफ्रीका में शांति एवं स्थिरता बहाल करने, सीरिया संकट के समाधान, अफगानिस्तान में राष्ट्रीय संप्रभुता बहाल करने जो मॉस्को वार्ता के सहमत ढांचे के तहत आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप न करने एवं राष्ट्रीय संप्रभुता के सिद्धांतों के इस्तेमाल जैसे ज्वलंत मुद्दों पर देशों को आंतरिक बदलाव के प्रोत्साहित करते समय अपने रुख में समन्वय जारी रखेंगे।[18,19,20]

भारत और रूस सामूहिक विनाश के हथियारों के प्रसार को रोकने के लिए संयुक्त रूप से प्रतिबद्ध है। रूस को विश्वास है कि बहुपक्षीय निर्यात नियंत्रण प्रणाली में भारत की सहभागिता उनकी समृद्धि में योगदान करेगी। इस परिप्रेक्ष्य में रूस परमाणु आपूर्तिकर्ता समूह और वासीनार व्यवस्था में सदस्यता के लिए भारत के आवेदन का स्वागत करता है और इन निर्यात नियंत्रण प्रणालियों में भारत के जल्द से जल्द प्रवेश के लिए अपने पुरजोर समर्थन को दोहराता है।

हम आतंकवाद की उसके सभी रूप में कड़ी निंदा करते हैं और इस बात पर जोर देते हैं कि आतंकवाद के किसी भी कृत्य के लिए कोई औचित्य नहीं हो सकता चाहे वह विचारधारा पर आधारित हो अथवा धार्मिक, राजनीतिक, नस्लीय, जातीय या किसी अन्य कारण से। साथ ही, हम अंतरराष्ट्रीय आतंकवाद, जो शांति एवं सुरक्षा को बरकरार रखने के लिए बड़ा खतरा बन चुका है, से मुकाबला करने के लिए अपने प्रयास जारी रखेंगे। हमारा मानना है कि इस खतरे के अप्रत्याशित विस्तार के मद्देनजर पूरे विश्व समुदाय को यूएन चार्टर एवं अंतरराष्ट्रीय कानून के तहत बिना किसी चयन अथवा दोहरे मानदंड के एक निर्णायक सामूहिक प्रतिक्रिया देने की जरूरत है। हम सभी देशों और संस्थाओं से अनुरोध करते हैं कि वे आतंकवादी नेटवर्क एवं उनके वित्तपोषण को ध्वस्त करने और आतंकवादियों की सीमापार आवाजाही को रोकने के लिए ईमानदारी से काम करें। हम इस संकट से निपटने के लिए वैश्विक आतंकवाद विरोधी मान्यताओं एवं कानूनी ढांचे को मजबूती देने के लिए अंतरराष्ट्रीय आतंकवाद पर व्यापक सम्मेलन वार्ता के शीघ्र निष्कर्ष की मांग करते हैं।

सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के उपयोग में सुरक्षा प्रदान करने के लिए साझा दृष्टिकोण अपनाते हुए हम इस संदर्भ में राज्यों के जिम्मेदार व्यवहार के सिद्धांतों एवं मानकों और सार्वभौमिक नियमों को तय करने के लिए साथ मिलकर काम करना चाहते हैं। ये नियम वैश्विक इंटरनेट प्रशासन में राज्य की प्रधानता के साथ विभिन्न हितधारकों के प्रतिनिधित्व वाले मॉडल के तहत लोकतांत्रिक आधार पर तय किए जाने चाहिए।

सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के उपयोग में सुरक्षा के क्षेत्र में सहयोग पर भारत-रूस अंतरसरकारी समझौते के आधार पर हम इस क्षेत्र में द्विपक्षीय बातचीत को आगे बढ़ाने की आवश्यकता को मानते हैं। भारत और रूस के लोगों के बीच सम्मान, सहानुभूति और अगाध पारस्परिक हितों को ध्यान में रखते हुए हम आदान-प्रदान एवं वार्षिक उत्सवों के आयोजन सहित संस्कृति एवं खेल के क्षेत्र में द्विपक्षीय संपर्क को और बेहतर बनाने की कोशिश करेंगे। साल 2017-18 में भारत और रूस के बीच राजनयिक संबंधों की स्थापना की 70वीं वर्षगांठ को मनाने के लिए हम दोनों देशों के विभिन्न शहरों में कार्यक्रमों के आयोजन का स्वागत करते हैं।[17,18,19]

शिक्षा के क्षेत्र में द्विपक्षीय सहयोग में अपार संभावनाएं मौजूद हैं। हम विश्वविद्यालयों एवं शैक्षणिक संस्थानों के बीच सीधा संपर्क को बढ़ावा देने और दोनों देशों के छात्रों को सहायता प्रदान करने के माध्यम से शिक्षा के क्षेत्र में सहयोग को मजबूती देने के लिए काम करेंगे।

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हमारा द्विपक्षीय सहयोग जबरदस्त अवसर प्रदान करता है। हम जलवायु परिवर्तन, पर्यावरण सुरक्षा, स्वच्छ ऊर्जा, साइबर सुरक्षा, किफायती स्वास्थ्य सेवा, समुद्री जीव विज्ञान आदि में वैज्ञानिक खोज के जरिये वैश्विक चुनौतियों से निपटने के लिए साथ मिलकर काम करने और साझा हितों वाले प्राथमिक क्षेत्रों को तलाशने के लिए प्रतिबद्ध हैं। हम सामाजिक विकास के लिए नवाचार को बढ़ावा देने और प्रौद्योगिकी के विकास के लिए ज्ञान केंद्रों का नेटवर्क तैयार करने, दिमागों की कनेक्टिविटी और वैज्ञानिक गलियारा स्थापित करने के लिए साथ मिलकर काम कर रहे हैं।

हम वीजा व्यवस्था को आसान बनाने के साथ-साथ लोगों से लोगों के बीच संपर्क एवं पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए काम करना चाहते हैं।

हमें पूरा भरोसा है कि भारत और रूस दोनों देशों के बीच मजबूत मैत्री और पारस्परिक रूप से लाभकारी एवं सामंजस्यपूर्ण भागीदारी के लिए एक आदर्श मॉडल बने रहेंगे। द्विपक्षीय संबंधों के विकास के साझा दृष्टिकोण के निर्माण के साथ-साथ हम दोनों देशों और पूरे अंतरराष्ट्रीय समुदाय के फायदे के लिए भारत-रूस विशेष एवं विशेषाधिकार प्राप्त सामरिक भागीदारी की व्यापक संभावनाओं को साकार करने में सफल होंगे।[16,17,18]

परिणाम

एक जून को प्रधानमंत्री रूस पहुँचे और रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन से मुलाकात की। दोनों देशों ने विभिन्न आपसी महत्त्व के महत्त्वपूर्ण समझौतों पर हस्ताक्षर करते हुये एक सयुंक्त वक्तव्य '21वीं सदी का एक दृष्टिपत्र' नाम से ज़ारी किया। भारत और रूस ने अपने संबंधों की 70वीं वर्षगांठ मनाते हुये कहा कि दोनों देशों के मध्य अटूट संबंधों का आधार प्रेम, सम्मान और दृढ़ विश्वास रहा है। उल्लेखनीय है कि पिछले दशक में भारत-रूस के संबंधों में एक निराशाजनक पैटर्न रहा है। अत: नई सहस्राब्दी में दोनों देशों को विश्व में मौज़ूद चुनौतियों और अवसरों को देखते हुए अपने संबंधों को एक नई दिशा देने की ज़रूरत है।

महत्त्वपूर्ण बिंदु

- दोनों देश रक्षा हार्डवेयर और प्रौद्योगिकी, परमाणु ऊर्जा एवं तेल और गैस जैसे क्षेत्रों में सहयोग कर रहे हैं।
- दोनों देश एक बहुध्रुवीय अंतर्राष्ट्रीय राजनीति और सुरक्षा अवसंरचना को बढ़ावा देना चाहते हैं।
- शीत युद्ध के अंत से ही वैश्विक परिस्थितियों में एक नाटकीय परिवर्तन हुआ है, ऐसे में दोनों देशों को अपने साझा हितों को विघटनकारी प्रवृत्तियों से बचाने की आवश्यकता है।
- ज्ञातव्य है कि दोनों देशों के संबंध, वैश्विक भू-राजनीतिक परिस्थितियों में हुए परिवर्तनों के बावज़ूद स्थिर बने हुए हैं।

  शीत युद्ध के बाद भारत-सोवियत रणनीतिक साझेदारी में परिवर्तन

रूस एवं चीन

- चीन के खतरे को देखते हुए ही दिल्ली और मास्को एक-दूसरे के करीब आए।
- शीत युद्ध के अंत के बाद रूस, चीन को अब अपनी सुरक्षा के लिये खतरा नहीं मानता है।
- रूस द्वारा चीन के साथ सीमा विवाद के निपटारे, आर्थिक और व्यापार संबंधों में विस्तार और रूसी हथियारों और रक्षा प्रौद्योगिकियों का चीन एक प्रमुख आयातक होने के कारण भारत एवं रूस का चीन के प्रति अलग-अलग दृष्टिकोण है।[[17,18]
- लेकिन चीन के बढ़ते विस्तार और परमाणु शस्त्रागार में गुणात्मक वृद्धि के कारण रूस अभी भी चीन के बारे में बहुत सावधान है। यह एक कारण हो सकता है कि रूस परमाणु हथियारों में कटौती से हिचकिचता रहा है।
- चीन द्वारा मध्य एशिया और पूर्वी यूरोप में विकसित किये जा रहे चीनी मार्ग पर भी रूस को आपत्ति है, क्योंकि दोनों ही क्षेत्रों का सामरिक महत्त्व है।
- रूस की चीन के साथ वर्तमान निकटता सामरिक संबंधों के कारण बनी हुई है।

भारत के लिये इसका क्या महत्त्व है?

- भारत को रूस-चीन के नए और सकारात्मक संबंधों के साथ समायोजित करने की आवश्यकता है।

- हमें चीन का सामना करने और पाकिस्तान के खिलाफ समर्थन प्राप्त करने के लिये मास्को पर निर्भर नहीं रहना चाहिये।
- भारत की तरह रूस भी एक बहुध्रुवीय विश्व का समर्थन करता है, लेकिन वह भी ऐसे विश्व की स्थापना नहीं चाहता, जिसकी परवी चीन करे। अत: हमें रूस के साथ दीर्घकालिक संबंधों के लिये एक व्यापक ढांचा तैयार करने की आवश्यकता है।
- भारत को यूरेशियन इकोनॉमिक यूनियन के साथ प्रस्तावित मुक्त व्यापार समझौते (FTA) को आगे बढ़ाना चाहिये और एक सदस्य के रूप में शंघाई सहयोग संगठन (SCO) में सक्रिय भूमिका निभानी चाहिये। इन सब परिस्थितियों को देखते हुये पूर्वी यूरोप और मध्य एशिया में भारत की महत्त्वपूर्ण भूमिका का रूस द्वारा समर्थन किया जा सकता है।
- रूस, अमेरिका और पश्चिमी यूरोप के साथ भारत को अपने संबंधों को मज़बूत करना चाहिये।
- यह भारत के हित में होगा कि वह इन तीनों प्रमुख भागीदारों का समन्वित समर्थन प्राप्त करे, ताकि परमाणु आपूर्तिकर्त्ता समूह में चीन के विरोध को कम किया जा सके तथा एन.एस.जी. में छूट प्राप्त की जा सके।
- एक अधिक संयुक्त और सुसंगत यूरोपीय संघ में रूस के फिर से जुड़ने का भारत द्वारा समर्थन किया जाना चाहिये, क्योंकि यह भारत के लिये लाभकारी होगा।
- अगर भारत के यू.एस.ए. , पश्चिमी यूरोप और रूस के साथ संबंध मजबूत होते है तो यह भारत को विश्व भू-राजनीति में अहम् भूमिका निभाने में मदद करेगा।

भारत-रूस रक्षा, परमाणु, ऊर्जा संबंध

- शीत युद्ध के अंत से ही भारत ने रूस के साथ एक मज़बूत दीर्घकालिक ऊर्जा भागीदारी स्थापित करने की कोशिश की है।
- भारत और रूस को पहले से चल रहे रक्षा हार्डवेयर और परमाणु ऊर्जा क्षेत्र में सहयोग बढ़ाने पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिये।
- अगर इन दोनों क्षेत्रों में भारतीय बाज़ार में हानि होती है तो इससे रूस को एक बड़ा झटका लग सकता है और भारत को उन्नत प्रौद्योगिकी से वंचित होना पड़ सकता है।
- इन्हीं सब कारणों से सेंट पीटर्सबर्ग में हुई बैठक में भारत और रूस ने एक "ऊर्जा गलियारा" स्थापित करने पर सहमति व्यक्त की और अपेक्षाकृत स्वच्छ और जलवायु-अनुकूल ईंधन के रूप में प्राकृतिक गैस के उपयोग पर ज़ोर दिया।
- लेकिन हाल की यात्रा के दौरान पाँचवीं पीढ़ी के लड़ाकू विमानों के सहयोग के बारे में कोई चर्चा नहीं हुई, जिसके सह-उत्पादन और विकास को लेकर दोनों देशों के मध्य लगभग एक दशक पहले सहमति बनी थी।

18वाँ वार्षिक 'भारत-रूस सम्मेलन' पहले की तुलना में अधिक महत्त्वपूर्ण रहा। इस सम्मलेन के बाद एक उम्मीद की जा सकती है कि दोनों देश तेज़ी से विकसित हो रही विश्व भू-राजनीतिक परिदृश्य में यथार्थवादी आधार पर मिलकर कार्य करेंगे। रूस की विदेश नीति का मूल्यांकन करने पर पता चलता है कि रूस और चीन के मध्य सामरिक निकटता बढ़ रही है। अत: भारत को इस वास्तविकता को ध्यान में रखते हुए रूस के साथ अपने संबंधों को आगे बढ़ाना चाहिये।
भारत और रूस के संबंध अत्यंत गहरे हैं। हमारे संबंध राजनीतिक व व्यापार संबंधों से भी बढ़कर: फ्रेंड्स ऑफ़ इंडिया कार्यक्रम में पीएम मोदी
भारत में जो लोग टीवी पर इस कार्यक्रम को देखते होंगे उनके लिए ये एक बहुत बड़ा आश्चर्य होगा। इस सभागृह में आधे लोग भारत से आए हैं और आधे लोग जिन्होंने भारत देखा भी नहीं है लेकिन भारत को भरपूर प्यार करते हैं। इतनी बड़ी मात्रा में रूसी नागरिक भारत के प्रति अपना प्यार अभिव्यक्त करें ये हर भारतीय के लिए गर्व का विषय है और सबसे बड़ा आश्चर्य रूसी कलाकारों ने , Russian नागरिकों ने जिस प्रकार से भारत की कला को, भारत की संस्कृति को, भारत की सांस्कृतिक विरासत को यहां पर प्रस्तुत किया, उजागर किया, मैं सचमुच में उनको बहुत-बहुत बधाई देता हूं और जिस प्रकार से उन्होंने पूरे कार्यक्रम में ऐसा लग रहा था वे पूरी तरह डूब चुके थे। एक-एक शब्द के साथ वे जुड़ चुके थे। वे सिर्फ अपने हाथ-पैर नहीं हिला रहे थे, वो मन से भारत से मिलन कर चुके थे।कार्यक्रम के प्रारंभ में मैंने सतीक काजानोवा को सुना और वे वैदिक मंत्रों का उच्चार कर रही थी, गणेश वंदना कर रही थी और पूरी तरह भाव-विभोर होकर के कर रही थी और मुझे बताया गया कि वे Russia की सबसे बड़ी Pop Singer है, जो Pop Singer है वो मंत्रों का इस प्रकार से गान करती हो और वो भी हाथ में कोई कागज वगैरह लेकर के नहीं, इसका मतलब हुआ उसने इसे एक तपस्या के रूप में स्वीकार किया हुआ है| वे रूसी नागरिक है, हिंदू मंत्रों को, हिंदू परंपरा को जीने का भरपूर प्रयास करती है और मुझे बताया गया कि उसका जन्म मुस्लिम परिवार में हुआ है। मुस्लिम परिवार, रूसी नागरिक, Pop Singer और वैदिक मंत्रों का उच्चार और जब मैं यहां आ रहा था तो कुछ लोगों का मेरा परिचय हुआ तो परिचय उनसे भी हुआ और उन्होंने इच्छा जताई कि मेरी एक इच्छा है कि Russia में एक भव्य हिंदू मंदिर बनाना चाहती हूं।

मैं सभी रूसी कलाकारों को, उन्होंने जो साधना की है और भारत को अपने आप में समेट लिया है। मैं उन सब कलाकारों को फिर एक बार हृदय से बहुत-बहुत अभिनंदन करता हूं, बहुत-बहुत बधाई देता हूं। Singer सतीक काजानोवा आप जिस लगन से गणेश वंदना कर रही हो, मुझे विश्वास है आपका सपना पूरा होकर ही रहेगा। आज ईद-ए-मिलाद विश्व भर में मनाई जा रही है। मैं ईद-ए-

मिलाद पर हर किसी को शुभकामनाएं देता हूं। कल क्रिसमस का पावन पर्व शुरू हो रहा है। मैं विश्वभर में क्रिसमस के पावन पर्व से जुड़े हुए सभी लोगों को शुभकामनाएं देता हूं और कल 25 दिसंबर भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी जी का जन्मदिवस है और आज अटल जी की लिखी हुई कविता 'मैं गीत नये गाता हूं'.... ये रूसी कलाकारों ने प्रस्तुत किया और गीत नये गाता हूं का जो आत्मविश्वास था, उसको प्रकट किया। उन्होंने अटल जी को इस प्रकार से याद किया, उनका सम्मान किया, मैं विशेष रूप से इन सबको बधाई देता हूं और ये बात भी मैं नहीं भूल सकता हूं क्योंकि मेरा जन्म गुजरात में हुआ। गुजराती गरबे को भी ऐसे vibrant बनाया जा सकता है, वो तो मैंने Russia में आकर के ही देखा। उस गरबे में जान भर दी इन लोगों ने, उसकी जो प्रस्तुति की, गुजरात वाले देखेंगे तो उनके लगेगा कि अगली बार नवरात्रि के त्यौहार में इन Russian लोगों से सीखना चाहिए, गरबा कैसे होते है।

भारत का और Russia का संबंध बहुत गहरा है। राजनीतिक संबंध होना, एक-दूसरे के साथ व्यापार-रोजगार होना। ये तो सदियों से चला आ रहा है लेकिन रूस में, Russia में, भारत की संस्कृति को, भारत के इतिहास को, भारत की परंपरा को जानने का, समझने का जो अभिरथ प्रयास चला है ये भारत और Russia के सांस्कृतिक संबंधों को एक अभूतपूर्व ताकत देता है। मुझे बताया गया कि Russia में 150 से ज्यादा भारतीय संगीत और कला की स्कूल चलती हैं और ये Russian नागरिक चलाते हैं। मैं अभी भारत पर अभ्यास करने वाले कुछ अध्यापकों से, Scholars से मिला, Indology का अध्ययन करने वाले और सब लोग मेरे से हिंदी में बात कर रहे थे और उन्होंने ने मुझे बताया कि हम भारत का इतिहास यहां पढ़ाते हैं, भारत के वीर पुरुषों की गाथाएं पढ़ाते हैं, भारत के वीर पुरुषों की गाथाएं यहां की प्रजा की प्रेरणा देती हैं और इतने उमंग से वे अपनी बातें बता रहे थे कि भारत के प्रति उनका लगाव क्या है, भारत को किस रूप में उन्होंने समझा है। हर भारतीय को गर्व हो, वो दृश्य मुझे दिखाई दे रहा था।

पिछले दिनों पूरे विश्व ने 21 जून को अंतराष्ट्रीय योग दिवस मनाया। आज पूरे विश्व में योगा के प्रति एक लगाव है और अभी एक रूसी बेटी ने योगा पर जो किताब लिखी है, मुझे गिफ्ट की, योगा के Ambassador के रूप में इसने पिछले साल काम किया और योगा के प्रचार के लिए वो भरपूर कोशिश कर रही है। मैंने उसे पूछा हिंदूस्तान में आप कब गईं, कहां सीखा, कैसे सीखा तो मुझे कह रही कि मैं तो अभी हिंदुस्तान गई नहीं हूं। मैंने इंटरनेट से सीखना शुरू किया और धीरे-धीरे मैं योग में समाहित हो गई और योग ही मेरा जीवन बन गया। Russia के अंदर 21 जून को 200 से अधिक स्थान पर योगा दिवस मनाया गया और मुझे बताया गया कि जो सार्वजनिक योगा हुआ इसके सिवाए जो हुए वो तो अलग लेकिन जो सार्वजनिक रूप से हुए कहते हैं कि करीब-करीब 45 से 50 हजार लोग उन्होंने सार्वजनिक रूप से योगा का कार्यक्रम किया। मैं Russia पहले भी आया हूं। मुझे Ashtarkan जाने का अवसर मिला था, Russia का एक प्रांत है और गुजरात के Sister State के रूप में उसके साथ एक समझौता हुआ था, अटल जी की जब सरकार थी तब मैं यहां आया था। उसके बाद भी मैं Ashtarkan गया था और मैंने देखा वहां पर आज भी एक India House है और 400 साल पुराना वो India House है। 1640-50 के कालखंड में जो भारत से लोग व्यापार करने के लिए आते थे वो अपना जाहज वहां रखकर के इस India House में रुकते थे और दो-दो, चार-चार, छह-छह महीने रुकना पड़ता था। उस जमाने में Russia के साथ ये व्यापारिक संबंध बने थे। उस जमाने में Diamond का कारोबार Russia के साथ भारत का चलता था। Russia के Scholar 300 साल, 400 साल पहले भारत में जाया करते थे, ये हमारी सांस्कृतिक विरासत है और आपने देखा होगा कि Russian भाषा में संस्कृत शब्दों का बड़ा प्रभाव है। एक प्रकार से संस्कृत भाषा की जुड़वा भाषओं के रूप में Russia निकट लगती है। रूसी भाषा अपनेपन वाली लगती है। बहुत सारे शब्द हैं। हम door कहें तो उनके मन में सवाल उठता है, द्वार कहें तो उनको पता चलता है कि मैं क्या कह रहा हूं। हम Tea बोलें तो उनके आश्चर्य होता है, चाय बोले तो उनको लगता है हां ये सही बोल रहा है और इसलिए मुझे याद है मैं एक बार Ashtarkan के Governor से एक बार मिला तो watermelon की चर्चा हो रही थी तो watermelon समझ नहीं आया मैंने तरबूज कहा तो वे हां बोले हां तरबूज ठीक है उनको तरबूज समझ आ गया यानि इतने शब्द हमारे सहज रूप से इनके साथ जुड़े हुए हैं, इतनी निकटता हमारी इनके साथ जुड़ी हुई है और आज वैश्विक परिवेश में अगर देखें आंख बंद करके कोई कह सकता है इस दुनिया में हर पल चाहे संकट का कालखंड हो या सुविधा का कालखंड हो कोई एक देश बिना झिझक अगर हिंदुस्तान के साथ खड़ा रहा तो उस देश का नाम है Russia।

हम युद्ध के समय जब संकट से गुजर रहे थे तब यही देश था जिसने हमारी मदद की और हमारे जांबाज जवान युद्ध के मैदान में विजय प्राप्त करके वापस आए थे। रूस भारत के साथ सदा-सर्वदा एक शक्ति के रूप में खड़ा रहा और ये शक्ति मित्रता की शक्ति है, दोस्ती की शक्ति है। जिसमें लेन-देन का कारोबार कम है लेकिन एक-दूसरे के लिए खड़े रहना ये Russia ने करके दिखाया है। जब विश्व में महासत्ताओं का बोलबाला था। महासत्ताओं की इच्छा पर दुनिया इधर-उधर जा सकती थी ऐसे समय भी भारत जो कि एक गरीब देश रहा, उसके साथ रूस ने अपना नाता बनाए रखा और आज भी कायम रखा है। अंतरराष्ट्रीय मंचों पर जब-जब भारत को किसी की जरूरत पड़ी, विश्व के पटल पर Russia हमेशा-हमेशा भारत के साथ, एक मजबूती के साथ खड़ा रहा और दुनिया के अंदर भारत की आवाज बुलंद बनाने में Russia की मदद हमेशा काम आई। आज बहुत बड़ी मात्रा में भारत के विद्यार्थी Russia में पढ़ने के लिए आ रहे हैं, उनको यहां अपनापन लगने लगा है लेकिन जितनी मात्रा में भारत में रूसी नागरिकों का tourist के नाते होना चाहिए, उतना होना अभी बाकी है। Russians are the best tourist, वो साल भर का अपना कार्यक्रम बनाते हैं कि 10 जाना कि नहीं जाना, 15 दिन जाना कि नहीं जाना। मैं सभी भारतवासियों से आग्रह करूंगा कि आप यहां आए हैं एक काम जरूर किजिए कि हर बार आपके प्रयत्न से कम से कम पांच रूसी परिवार भारत में tourist के नाते जाएं। आप देखिए लाखों की तादाद में रूसी नागरिक भारत में tourist के नाते जाएंगे। भारत के प्रति उनका आर्कषण है, ये हमारा काम है कि हम एक बार दरवाजे खोलकर उनको ले चलें, उंगली पकड़कर के ले चले और एक बार सिलसिला चल पड़ा तो 10 साल, 20 साल वो चलता रहता है tourist आते रहते हैं और tourist जब आते हैं तब सिर्फ वहां देखकर के आते नहीं हैं अपने साथ भारत की यादें लेकर के आते हैं, जो यादें यहां पर

बोई जाती हैं और उसमें संबंधों के वृक्ष पैदा होते हैं जहां पर कभी हमें शांति और मित्रता की छाया मिलती रहती है और इसलिए हमारा प्रयास रहना चाहिए कि Russia से भारत में अधिकतम लोग tourist के रूप में कैसे आएं, हम लोगों का प्रयास रहना चाहिए। [16,17]जिस देश के नागिरकों को भारत के प्रति इतना लगाव हो, उनको भारत दिखाना, भारत के प्रति आकर्षित करना, भारत को देखने के लिए प्रेरित करना ये हम सबका सामूहिक कर्तव्य है और मैं विशेष रूप से Russia में आकर के रहने वाले मेरे भारतीय भाईयों को, नौजवानों को विशेष आग्रह करता हूं कि इस काम को हम करें।

आज पूरे विश्व में भारत के आर्थिक विकास की चर्चा हो रही है। चाहे World bank हो, IMF हो, दुनिया की Rating agencies हो हर कोई एक स्वर से कहता है कि आज दुनिया में जो बड़ी Economies है इसमें सबसे तेज गति से आगे बढ़ने वाली कोई Economy है तो उसका नाम है हिंदुस्तान। 20वीं सदी के अंत में ये चर्चा होती थी कि 21वीं सदी एशिया की सदी बनेगी। दुनिया ने मान लिया था कि 21वीं सदी एशिया की सदी होगी लेकिन दुनिया ये तय नहीं कर पाती थी कि 21वीं सदी का नेतृत्व करने वाले लोग कौन होंगे। आज 21वीं सदी के दूसरे दशक में विश्व जिस प्रकार से भारत की ओर देख रहा है, इशारा साफ-साफ है कि हिंदुस्तान 21वीं सदी में अपनी बहुत बड़ी भूमिका अदा करेगा। आर्थिक रूप से भारत ने अपनी एक जगह बनाई है और भारत एक तेज गति से आगे बढ़ रहा है। आज से कुछ साल पहले दुनिया की नजरों में भारत एक बाजार था। विश्व को लगता था कि हम हिंदुस्तान जाएंगे, माल बेचेंगे, कमाएंगे क्योंकि भारत में खरीदार बहुत हैं लेकिन आज 21वीं सदी के दूसरे दशक आते-आते स्थिति बदल रही है। कल तक जिनको भारत बाजार लगता था वो आज लोगों को भारत एक manufacturing hub बन सकता है, भारत दुनिया की आवश्यकताओं को पूर्ण कर सके ऐसी ताकत बनके उभर सकता है, इस तरफ लोगों की नजर गई है और हमारी भी कोशिश है कि भारत manufacturing hub के रूप में कैसे आगे बढ़े और जब हम manufacturing hub की बात करते हैं तो हवा में नहीं करते हैं। भारत के पास ये सामर्थ्य है और सदियों पहले था भी, हिंदुस्तान को सोने की चिड़िया ऐसे ही थोड़े कहा गया होगा, कुछ तो होगा हमारे पास लेकिन गुलामी के कालखंड में सब लुट चुका। अब हमारी जिम्मेवारी है कि ये देश फिर से ताकतवर बनकर के खड़ा हो जाए और संभावना पूरी है।

भारत एक संभावनाओं का देश है। जिस देश के पास 800 million 35 साल से कम उम्र के नौजवान हो। इतनी बड़ी तादाद में करीब-करीब 65 प्रतिशत जनसंख्या 35 साल से कम उम्र की हो, जो देश इतना जवान हो, उसके सपने भी जवान होते हैं, उसके इरादे भी जवान होते हैं और वो इन चीजों को प्राप्त करने का सामर्थ्य रखता है। भारत के सपने जाग चुके हैं, भारत का नौजवान जाग चुका है, भारत आगे बढ़ने का संकल्प ले चुका है और सवा सौ करोड़ देशवासियों की ताकत है जिसने एक बार ठान ली अगर एक हिंदुस्तानी एक कदम चलता है तो हिंदुस्तान सवा सौ करोड़ कदम चल पड़ता है और यही कारण है कि भारत आज विकास की नई राह पर चला है और ऐसा नहीं है कि भारत के पास समस्याएं नहीं हैं। दुनिया के समृद्ध से समृद्ध देश के पास भी समस्याएं हैं लेकिन कुछ लोग होते हैं जो सुबह शाम समस्याओं को गिनते-गिनते रोते रहते हैं और कुछ लोग हैं जो समस्याओं के समाधान के रास्ते खोजते हैं और आगे के लिए चल पड़ते हैं। आज हिंदुस्तान समस्याओं के रास्ते खोज रहा है, आज आगे चलने के इरादे से चल पड़ रहा है और उसका परिणाम भी, उसका परिणाम नजर आ रहा है।

पिछले एक साल के भीतर-भीतर विश्व के देशों ने, विश्व के उद्योग जगत ने Foreign direct investment में 40 प्रतिशत वृद्धि होना। एक साल में 40 percent increase ये छोटी घटना नहीं है और दुनिया में अगर कोई दम नहीं दिखता है तो कोई रुपया डालेगा क्या, हम भी डालेंगे क्या, यहां जो आप मेरे भारत के लोग रहते हैं, आपको अगर भरोसा नहीं हो तो पांच रुपये डालोगे क्या। जब भरोसा होता है कि जो डाल रहे तो return मिलने वाला है, assurance पक्का लगता है, रुपयों की security नजर आती है तब लोग रुपये डालने की कोशिश करते हैं। आज लोग भारत में रुपये डाल रहे हैं, उसका कारण है कि उनको विश्वास हो चुका है कि अब यही एक जगह है जहां से हम आगे बढ़ने वाले हैं। विश्व के पूंजी निवेश से हम भारत में आधुनिक Infrastructure बनाना चाहते हैं। हमने रेलवे को 100 प्रतिशत Foreign direct investment के लिए open up कर दिया है। भारत की वो रेलवे अब आधुनिक होनी चाहिए कि नहीं होनी चाहिए, उसकी गति बढ़नी चाहिए कि नहीं चाहिए, Train का रंग-रूप भी बदलना चाहिए कि नहीं चाहिए, दूर-दूर तक हमारी रेल जानी चाहिए कि नहीं चाहिए। हम सिर्फ ये ही कहें हमारी रेल इतनी पुरानी है, इतने समय से चल रही है, ये गीत गाने से नहीं चलता है, संकल्प लेकर के आगे बढ़ने से देश आगे बढ़ता है और इसलिए और तब जाकर के रेलवे में दुनिया के लोग पूंजी निवेश के लिए आ रहे हैं। अभी जापान के साथ भारत में एक agreement हुआ, मुंबई-अहमदाबाद बुलेट ट्रेन का। जापान बहुत कम ब्याज से 0.1 percent धन लगाएगा करीब एक लाख करोड़ रुपया लगाएगा और एक लाख करोड़ रुपया लगेगा तो रोजी-रोटी तो वहीं लोगों को मिलने वाली है, हिंदुस्तान के लोगों को मिलने वाली है, देश बदल भी सकता है।

Russia हमारे यहां अणु विद्युत पर काम कर रहा है और आने वाले दिनों में Nuclear Energy पर आज हमारा उनके साथ समझौता हुआ है। दुनिया जो Global warming से लड़ाई लड़ रही है, Nuclear Energy के द्वारा Global warming की समस्या खोजने का प्रयास भारत और Russia मिलकर के कर रहे हैं, जो आने वाले दिनों में मानव जात का कल्याण होने वाला है तो हम एक विकास को आधुनिकता की तरफ ले जाना चाहते हैं, विकास को नई ऊंचाइयों की पर ले जाना चाहते हैं और विकास का लाभ भारत के गरीब से गरीब व्यक्ति को कैसे मिले ये हम सुनिश्चित करना चाहते हैं और इसलिए एक तरफ आर्थिक विकास हो और दूसरी तरफ सामाजिक शक्ति में बढ़ावा हो ताकि एक-एक गरीब से गरीब परिवार भी आर्थिक रूप से सामर्थ्यवान बने तभी जाकर के देश की जड़ें मजबूत होंगी और इसलिए इन दोनों दिशाओं में आज भारत को आगे बढ़ाने के लिए प्रयत्नरत हैं और उसके नतीजे भी दिखाई दे रहे हैं, उसके परिणाम भी नजर आ रहे हैं। आज विश्व में कोई भी निर्णय होता है, उस निर्णय में भारत की भी कोई न कोई भूमिका होती है वरना हमारी क्या भूमिका रहती थी, हम एक मूकदर्शक रहते थे और देखते हैं दुनिया इधर जा रही है कि उधर जा रही है, इधर गई

तो ठीक है, उधर गई तो ठीक है, हम देखते रहते थे। आज ऐसा नहीं है, आज दुनिया देखती है, ये कर रहे हैं लेकिन पहले देखो तो सही भारत क्या सोच रहा है, क्या भारत साथ चलेगा क्या।

भारत ने विश्व में अपनी एक जगह बनाई है और उस जगह को लेकर के, आतंकवाद के खिलाफ पूरे विश्व में अब नजरिया बदल रहा है। 30 साल से दुनिया को डंके की चोट पर हिंदुस्तान कहता रहा कि आतंकवाद मानवता का दुश्मन है और जो-जो मानवता में विश्वास करते हैं उन सबने एक आना चाहिए और एक मन करके आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई लड़नी चाहिए तब दुनिया को हमारी बात गले नहीं उतरती थी, उनको लगता था कि ये तो आपके देश का problem है। हम दुनिया को समझा-समझा कर थक गए कि आतंकवाद की न कोई सीमाएं होती है न कोई समय होता है न ही उसका कोई target तय होता है। वो कहीं पर भी धमक सकता है, वो निर्दोषों को मारने पर तुला हुआ है, 30 साल तक जो हमारी बात मानी नहीं, आज आतंकवादियों की करतूतों ने, उनकी बेहरहमी ने निर्दोषों पर हो रहे उनके जुल्म के तरकत और तरीके ने पूरे विश्व को झकझोर दिया है और पूरी दुनिया आज हिन्दुस्तान की उस बात को मानने के लिए मजबूर हुई है कि आतंकवाद ये मानवता का दुश्मन है और मानवता में विश्वास करने वालों को एक आना अनिवार्य हो गया है।

ये बात आज दुनिया के गले में उतारने में हिन्दुस्तान सफल हुआ है। हर कोई, हर कोई आतंकवाद से बाहर निकलने के लिए झटपटा रहा है और समय की मांग है कि मानवतावादी शक्तियां एक आए, आतंकवाद को समाप्त करने का संकल्प करें, आतंकवाद को समाप्त करने के लिए सहयोग करें कंधे-से-कंधा मिला करके मानवतावादी शक्तियां अगर खड़ी हो जाएगी तो आतंकवाद को खत्म करना कोई मुश्किल काम नहीं है और उस रास्ते पर भारत और Russia मिल करके काम कर रहे हैं ।

Russia की हमारी दोस्ती एक समान सोच पर आगे बढ़ रही है और जिसका विश्व को लाभ होने वाला है। भाईयों-बहनों भारत और Russia के संबंध, अब एक Central Asia की एक नयी ताकत के रूप में उभर रहे है और Central Asia की ताकत अनेक क्षेत्रों में, अनेक भू-भाग में आर्थिक संपन्नता का एक नया कारण बन सकती है।

किसी जमाने में यूरोपीय यूनियन की चर्चा होती थी, किसी जमाने में ASEAN countries की चर्चा होती थी। वो दिन दूर नहीं होगा जब दुनिया में Eurasia की चर्चा होना शुरू हो जाएगी। एक ऐसी, एक ऐसी, एक ऐसी ताकतवर इकाई खड़ी होगी जो आने वाले दिनों में एक बहुत बड़े भू-भाग में संतुलन का कारण बनेगी, आर्थिक विकास के लिए catalyst agent बनेगी और सुख और शांति की खोज में मिल-बैठ करके जगह के लिए एक नय मजबूत platform तैयार करेगी। ये मैं नजर देख रहा हूं।

आज President पुतिन के साथ Eurasia के भविष्य के संबंध में मेरी काफी विस्तार से बाते हुई है। अपार संभावनाओं को हमने तलाशा है और आगे आने वाले दिनों में मिल-बैठ करके Eurasia किस रूप से शक्ति रूप बने, विकास के अवसरों को प्रदान करने का कारण कैसे बने, परिस्थिति पलटने के लिए साथ मिल करके कैसा परिणाम लाया जा सकता है। उस दिशा में हमने विस्तार से बातें की है, योजनाएं सोची है। जिसका परिणाम आने वाले दिनों में नजर आने वाला है।

मेरी ये यात्रा बहुत कम समय की थी कल रात को आया और अभी चला जाऊंगा। लेकिन मैं कहता हूं इतने कम समय में बहुत ही सफल, बहुत ही फलदायी, बहुत ही परिणामकारी ये यात्रा रही है।

मैं Russia का, Russian सरकार का गर्मजोशी से हम लोगों का स्वागत-सम्मान करने के लिए बहुत आभार व्यक्त करता हूं। और आपने जिस प्यार से, Russian कलाकारों ने भारत भक्ति के दर्शन किए, दर्शन कराए उसके लिए आपका भी बहुत-बहुत आभार व्यक्त करता हूं।[19]

निष्कर्ष

उस दिशा में हमने विस्तार से बातें की है, योजनाएं सोची है। जिसका परिणाम आने वाले दिनों में नजर आने वाला है।

मेरी ये यात्रा बहुत कम समय की थी कल रात को आया और अभी चला जाऊंगा। लेकिन मैं कहता हूं इतने कम समय में बहुत ही सफल, बहुत ही फलदायी, बहुत ही परिणामकारी ये यात्रा रही है।

मैं Russia का, Russian सरकार का गर्मजोशी से हम लोगों का स्वागत-सम्मान करने के लिए बहुत आभार व्यक्त करता हूं। और आपने जिस प्यार से, Russian कलाकारों ने भारत भक्ति के दर्शन किए, दर्शन कराए उसके लिए आपका भी बहुत-बहुत आभार व्यक्त करता हूं।[20]

संदर्भ

1. इंडिया टुडे । 24 दिसंबर 2022 को लिया गया।
2. ↑ ए बी सी डी शर्मा, राजीव (28 नवंबर 2012)। "शीर्ष भारतीय राजनयिक ने भारत के लिए रूस के महत्व को सेवा दी" । रूस से परे । 8 फरवरी 2022 को लिया गया ।
3. ↑ ए बी सी डी ई शर्मा, राजीव (26 सितंबर 2012)। "भारत-रूस अंतर-सरकारी आयोग की बैठक अक्टूबर के मध्य में होगी" । रूस से परे । 8 फरवरी 2022 को लिया गया ।

4. ↑ काशानी, सरवर (9 जून 2010) "भारत को एससीओ में शामिल होने का अधिकार है, पाकिस्तान को नहीं: रूसी दूत" । न्यूकेरल । 2 अप्रैल 2012 को मूल से संग्रहीत । 24 अप्रैल 2016 को लिया गया ।
5. ^ "रूसी दूत ने भारत के लिए UNSC में स्थायी सीट की मांग की" । 3 मई 2024 को लिया गया ।
6. ↑ ऐ बी सी मुनि, सुख देव; जेटली, राजश्री (2008)। "सारक: आयाम" (पीडीएफ) । संयुक्त राष्ट्र विश्वविद्यालय - तुलनात्मक क्षेत्रीय एकीकरण अध्ययन। मूल (पीडीएफ) से 3 फरवरी 2016 को प्रकाशित।
7. ^ ए बी "रूस सरकार में पर्यवेक्षक के रूप में शामिल होने का इच्छुक है"। वनइंडिया । 22 नवंबर 2006 । 24 अप्रैल 2016 को लिया गया ।
8. ^ जॉन पेक "वीओए न्यूज़ रिपोर्ट" । 24 अप्रैल 2016 को लिया गया ।
9. ^ "भारत में रूसी दूतावास और वाणिज्य दूतावास" . EmbassyPages.com । पुनः प्राप्त किया गया 10 सितंबर 2020 .
10. ^ 2014 वर्ल्ड सर्विस पोल 22 जनवरी 2015 को वेबबैक मशीन बीबीसी
11. ^ बागची, इंद्राणी (28 जून 2018)। "रूस के शीर्ष 5 मित्रों भारत में" । टाइम्स ऑफ इंडिया । 13 जुलाई 2018 को लिया गया ।
12. ^ सर्वेक्षण में कहा गया है कि "रूस-यूक्रेन संकट से निपटने के लिए 10 में से 6 लोग भारतीय सरकार का समर्थन करते हैं" । व्यापार आज। 3 मार्च 2022 । 3 मार्च 2022 को लिया गया ।
13. ^ मट्टू, आदित्य गौड़ा शिवमूर्ति और अंतरा घोषाल सिंह और हर्ष वी. पंत और प्रेमशा साहा और रेणिता डिसूजा और शशांक मट्टू और शशांक। "विदेश नीति सर्वेक्षण 2022: भारत @75 और विश्व" । ओव । 4 नवंबर 2022 को लिया गया ।
14. ^ बान, पॉल जी. (2000). विश्व का सबसे बड़ा ज्योतिषी . न्यूयॉर्क: चेकमार्क बुक्स. पी.जी. 128 . 0-8160-4051-6.
15. ↑ वोल्कोव, डेनियल (2013). "अथानासियस निकितिन द्वारा तीन समुद्र पार की यात्रा" [अथानासियस निकितिन द्वारा तीन समुद्र पार की यात्रा]। Проза.ру (Proza.ru) .
16. ^ रुबचेंको, मैक्सिम (9 सितंबर 2016)। "रूस और भारत: एक सभ्यतागत मित्रता" । रूस से परे । 28 मई 2019 को लिया गया ।
17. ^ "18वीं सदी के रूस ने भारतीय मूल का स्वागत किया और उनका सम्मान किया" । 16 सितंबर 2016।
18. ^ "आतंकवाद का भारत कनेक्शन" । 16 मार्च 2020।
19. ^ जॉन डब्ल्यू. स्ट्रॉन्ग, "रूस ने 1801 में भारत पर आक्रमण की योजनाएँ बनाईं।" कैनेडियन स्लावोनिक पेपर्स 7.1 (1965): 114-126. ऑनलाइन
20. ^ "मॉस्को में भारतीय राजनयिक संपदा" . indianembassy-moscow.gov.in . 26 अक्टूबर 2023 को लिया गया .

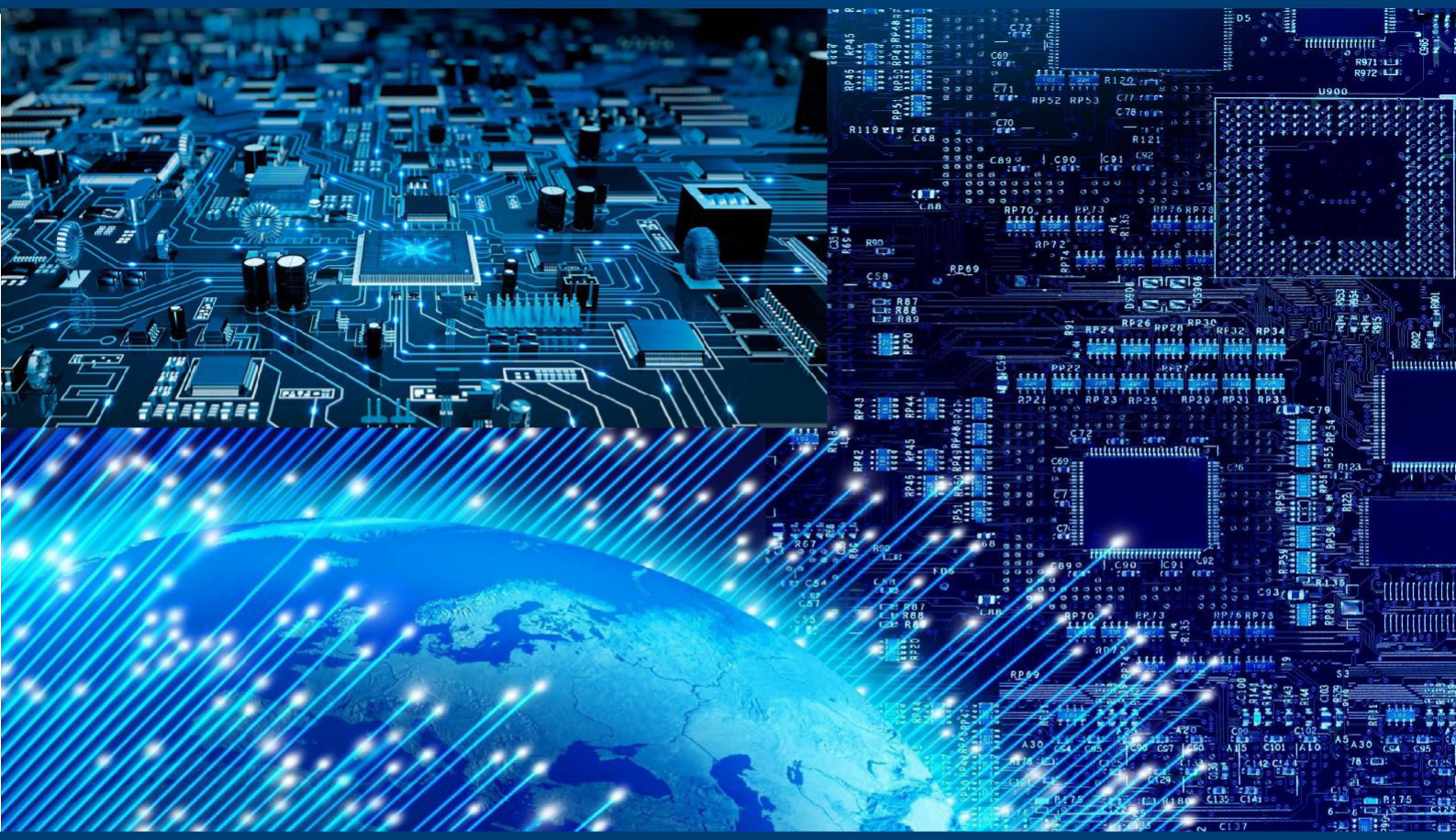

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| Mobile No: +91-9940572462 | Whatsapp: +91-9940572462 | ijarasem@gmail.com |